दिनांक :- 20-05-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फारूक आज़म (अतिथी शिक्षक)

स्नातक :- द्वितीय खंड (कला)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

इकाई :- सात

पत्र :- चतुर्थ

अध्याय :- चीन में गणतंत्र की दशातक (गणतंत्र का छायाभास 1912 ई० में चीन की आंतरिक दशा।

1911 ई० की क्रांति के फलस्वरूप चीन में गणतंत्र की स्थापना हुई। 12 फरवरी 1912 ई० को मंचू सम्राट चीं ग ने पदत्याग कर दिया और सत्ता युवान शी-काई के हाथों में सौंप दिया। देश फौजी शासन के मातहत आ गया जो युवान शी-काई का प्रमुख काल (1912-1916) ई० तथा। 1916 से 1926 ई० के केंद्रीय सत्ता नाम मात्र की थी तथा प्रांतों में सिपहसालारों का

वर्चस्व था। अतएव पहले हम इस फौजी शासन की पृष्ठभूमि को समझने का प्रयास करेंगे।

मंचू शासन के तहत प्रांतीय शासन में, एक गवर्नर, एक खजांची, एक न्यायधीश एक, नमक नियंत्रक, एक गल्ला गवर्नर तथा उसके सहायक होते थे। ये अधिकारी केन्द्रीय सरकार के नियंत्रण में थे। इनका चयन और इनकी प्रोन्नति केंद्रीय सरकार ही करती थी तथा ये इसके प्रति ही निष्ठावान थे। इनके अतिरिक्त फौजी गवर्नर भी थे। जिनकी सेना (Banner and Green Standard troops)

मंचू विजेताओं के हित में देश की रक्षक सेना थी। यह राष्ट्रीय सेना की तरह थी। किंतु 19वीं शताब्दी में इसकी योद्धा-शक्ति नहीं के बराबर रह गई थी। इसके अतिरिक्त राहजनी और विद्रोह दमन के लिए कभी कभी सैनिक बल का गठन किया जाता था।

Scanned with CamScanner

यह प्रांतीय पुलिस होती थी जिसका गठन उप-शासक (viceroy) या असैनिक गवर्नर करता था। यह पुलिसबल उसके अधीन काम करता था। इन्हें प्रांतीय कोष से वेतन मिलता था। फलतः वे प्रांतीय गवर्नर के प्रति निष्ठावान बने रहते थे। राज्य के प्रति इनकी कोई निष्ठा नहीं थी।

एक नई राष्ट्रीय सेना के गठन की प्रक्रिया पहले तो ली-हुंग-चांग (Li-Hung-chang) और बाद में यूवान शी-काई के नेतृत्व में शुरू हो गई थी लेकिन 1911 ई० के पहले यह वास्तविक रूप से राष्ट्रीय नहीं बन पाई थी। यह मुख्य रूप से उत्तरी और दक्षिणी प्रांतों में विद्यमान थी तथा इसे पियंग (Pieyong) सेना के साथ जोड़ दिया गया था। इसका गठन यूवान शी-काई ने किया था। अतएव यह उसके प्रति निष्ठावान थी। राज्य के प्रति इनकी कोई निष्ठा नहीं थी।

संवैधानिक आंदोलन के फलस्वरूप मंचू शासकों के

अधीन प्रांतीय धारा सभाओं की स्थापना की गई थी 1909 में अनेक प्रांतों में धारा सभाओं की स्थापना की गई थी। क्रांति के बाद भी ये बनी रही। केवल युवान शी-काई के व्यक्तिगत शासनकाल में ये स्थगित रहीं 1911 ई० में जब क्रांति फूट पड़ी तो कुछ स्थानों में नियमित प्रांतीय अधिकारियों ने गणतंत्र के प्रति निष्ठा व्यक्त की तथा प्रांतीय नियंत्रण अनेक क्षेत्र में बना रहा। कुछ प्रांत में साम्राज्यीय अधिकारी निकाल-बाहर किए गए तथा प्रांतीय धारा सभा का उस पर नियंत्रण हो गया। क्रांति समर्थक कुलीन या साम्राज्यीय अधिकारी को इसका अध्यक्ष बनाया गया। यह सब काम केवल क्रांति काल में यांगत्सी के दक्षिणी प्रांतों में हुआ। दक्षिणी प्रांतों में जो अधिकारी जम गए उन्हें अपनी-अपनी सेना का समर्थन प्राप्त था।

जो प्रांत मंचू देश के प्रति स्वाभाविक थे। क्रांति के फलस्वरूप वहाँ के गवर्नर यूवान शी-काई के प्रति निष्ठावान हो गए। उनकी यह निष्ठा व्यक्तिगत तथा मंचू वंश के विधिक उत्तराधिकारी के रूप में थी। किंतु इन प्रांतों में तथा दक्षिणी प्रांतों में फौजी शासन ही था यूवान शी-काई ही शासनाध्यक्ष था।

जैसे कि पहले ही कहा गया है कि 1911 ई० के पहले सेना पर प्रांतीय गवर्नर का नियंत्रण था। क्रांति काल में देश के सभी भागों में सैनिकों की संख्या में वृद्धि की गई। साम्राज्यीय तथा क्रांतिकारी सेनाओं में वे लोग भर्ती हुए जो विपन्नावस्था में थे या जिनकी माली हालत ठीक नहीं थी या जो लूट-पाट करते थे। उन्हें आशा थी कि सेना में भर्ती होने पर उन्हें वेतन तथा रोटी कपड़ा मिलेगा। उन्हें वेतन तो बराबर नहीं दिया गया लेकिन भोजन मिलता रहा।

जिलो में भी सैनिक कमांडर होते थे। जिनके पास जितनी सेना होती थी उनका राजनीतिक प्रभाव उतना ही होता था। प्रांत के भीतर ही अनेक सशस्त्र दल निकाय। प्रांतीय अधिकारियो के प्रति उनकी नाममात्र की स्वामिभक्ति थी। जिलो में इनकी ही तूती बोलती थी। वे लोगो से कर वसूलते थे तथा भेंट-उपहार प्राप्त करते थे। वे अपने स्थानीय शासन मे व्यय के बाद शेष राशि प्रांतीय सिपहसालार को भेजते थे। लेकिन प्रांत से कोई राशि बाहर नही जाती थी।

क्रांति का अर्थ

राष्ट्रपति बनते ही युवान शी-काई ने देश मे शांति व्यवस्था बनाए रखने का प्रयास किया। किंतु उसे स्वतंत्र सैनिको के दल के नेताओ या सिपहसालारो के विरोध का सामना करना पड़ा। वित्तीय अभाव मे सैनिको के बकाए वेतन का भुगतान संभव नही

था तथा सिपहसालारों को भी कुछ ले-देकर अपने पक्ष में करना मुश्किल था। साथ ही उनकी सैनिक टुकड़ियों को तोड़ना ही संभव नहीं था क्योंकि उनकी जीविका के लिए कोई अस्थायी व्यवस्था नहीं की जा सकती थी। ऐसा नहीं करने पर वे लूट-पाट में लग जाते जिससे देश कि शांति-व्यवस्था और भी खतरे में पड़ जाती फलतः राष्ट्रपति ने अनेक प्रांतों में सिपहसालारों को गवर्नर बना दिया तथा स्थिति सामान्य होने पर सैन्य-दल तोड़ने के लिए कहा गया। तुतुह या सैनिक गवर्नर को प्रांतिय धारा सभा के नियंत्रण में भी लाने का प्रयास किया गया। उसे प्रांत में शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए कहा गया। सैनिक सूबेदारी के अतिरिक्त कुछ अन्य पद भी बनाए गए। नानकिंग के सामूज्यीय कमांडर चांग सुन (Chang Hsun) को खुश करने के लिए पद दिया गया।

Scanned with CamScanner